Research Reinforcement | A Peer Reviewed International Refereed Journal | ISSN 2348-3857
Vol. 11, Issue 2 | November 2023 - April 2024 | pp. 130-134

पंचपीर एवं वैष्णव परम्परा : बाबा रामदेव के विशेष संदर्भ में

सुमन देवी शर्मा

सहायक आचार्य, इतिहास
बी.एन.डी. राजकीय कला महाविद्यालय, चिमनपुरा, जयपुर (राजस्थान)

शोध सारांश

राजस्थान के पांच पीर राजस्थान ही नहीं बल्कि सम्पूर्ण भारत में अपना एक अलग स्थान रखते है। इन पांच पीरों में बाबा रामदेव, पाबूजी, हड़बूजी, मेहाजी एवं गोगाजी सम्मिलित हैं। राजस्थान के ये पांच पीर भक्तिकाल से ही अमूर्त धरोहर को संजोये हुए हैं। इन पांचों पीरों का समय एक-दूसरे से अलग होते हुए भी इनके विचार एवं विचारधारा में साम्यता देखने को मिलती है। इनके द्वारा किये गये परोपकारी कार्यों के कारण आमजन ने इनको उच्च स्थान प्रदान किया। यह पांच पीर सांस्कृतिक समन्वय के प्रतीक माने जाते है इसलिए इनकी विचारधारा में भी अनेक धर्म एवं सम्प्रदायों का प्रभाव साफ तौर पर दिखाई देता है। बाबा रामदेव के भक्त कवियों ने रामदेव को पीर या लोकदेवता तक ही सीमित नहीं मानकर द्वारकाधीश श्रीकृष्ण या विष्णु का अवतार माना है। बाबा रामदेव के जन्म को लेकर एवं वैष्णव परम्परा को लेकर बचपन से अनेक वृतान्त एवं लोक आख्यान जुड़े हुए है। बाबा रामदेव के परिवार में सामाजिक समन्वय एवं पीर परम्परा के साथ ही वैष्णव परम्परा का समन्वय उनके दादा रिणसी के समय से ही दिखाई देता है। प्रस्तुत शोध पत्र में पांच पीरों को वैष्णव परम्परा के साथ में जुड़ाव एवं विशेष कर बाबा रामदेव का वैष्णव परम्परा के साथ में सामंजस्य को परखा जायेगा। बाबा रामदेव का जन्म एवं वैष्णव परम्परा एवं उनके भक्तों द्वारा विष्णु के अवतार में प्रतिपादन किया प्रमुख ध्येय होगा। इस लेख का मुख्य प्रतिपाद्य इन पांच पीरों में सबसे प्रमुख बाबा रामदेव का वैष्णव परम्परा से सामंजस्य पर चर्चा करना है।

संकेताक्षर—*सांस्कृतिक समन्वय, लोक आख्यान, पीर परम्परा*

प्रस्तावना

सर्वविदित है कि राजस्थान अन्य धार्मिक परम्पराओं के साथ-साथ सदैव वैष्णव परम्परा का अनुगामी रहा है। राजस्थान में वैष्णव परम्परा के अनेक उदाहरण देखने को मिलते हैं जिसमें ढूंढाड़, मारवाड़, मेवाड़ आदि में शासकों व जनसामान्य द्वारा वैष्णव धर्म को आश्रय दिया गया एवं इस सम्प्रदाय से सम्बन्धित मंदिर एवं अन्य मूर्त संस्कृति को भी अपनाया। उनकी अबाध साधना और भक्ति ने राजस्थान को भक्ति रंग में रंग दिया। राजस्थान में भक्ति आंदोलन ने इस रंग को और अधिक मजबूत किया। वैष्णव सम्प्रदाय के लोकदेवताओं ने अपनी बुद्धि एवं आध्यात्मिक साधना तप के बल पर अगम-अगोचर सनातन सत्य को अनेक रूपों में अभिव्यक्त किया जो उल्लेखनीय है। चिन्तन की इसी उदारता के कारण ही ज्ञान, भक्ति, कर्म को संत-महात्माओं द्वारा समान रूप से प्रतिष्ठित किया। साधक अपनी प्रवृत्ति एवं सामर्थ्य के अनुरूप ही चरम सत्ता को साकार-निराकार, सगुण-निर्गुण रूप में खोजा एवं पाया है।

राजस्थान में धर्म का विकास वैष्णव, शैव एवं शाक्त धर्म आदि के रूप में हुआ लेकिन साथ ही जैन धर्म, बौद्ध धर्म एवं इस्लाम धर्म की उपासना को लेकर विभिन्न सम्प्रदाय प्रचलित थे। इनमें भी वैष्णव मत काफी लोकप्रिय था। उत्तर-गुप्त एवं उनके बाद के युग की विष्णु और उसके अवतारों की प्रतिमाएँ

बहुत बड़ी संख्या में पूरे भारतवर्ष में मिलती है[1], जो इस बात का प्रमाण है कि उस समय वैष्णव सम्प्रदाय राजस्थान में प्रत्येक जगह पर फैला हुआ था। गुर्जर प्रतिहारों के समय में पश्चिमी राजस्थान में इस सम्प्रदाय को और अधिक बल मिलने लगा। इसके साथ ही हरिहर प्रतिमाओं को देखने से यह ज्ञात होता है कि वैष्णव सम्प्रदाय के साथ में शैव सम्प्रदाय का महत्व भी इस क्षेत्र में बराबर था।

उक्त सम्प्रदायों के साथ में 9-10 वीं शताब्दी के बाद में मुख्य धारा के देवताओं के साथ में लोक देवताओं का प्रचलन एवं पूजा पद्धति धीरे-धीरे बढ़ने लगी। आमजन के करीब होने के कारण इन देवताओं ने लोकमानस में मुख्य जगह बना ली जिसके फलस्वरूप घर-घर में इनकी पूजा एवं मान्यता बढ़ने लगी। इन लोक देवताओं में प्रमुख है—बाबा रामदेव, पाबूजी, हड़बूजी, मेहाजी एवं गोगाजी। इनके लिए एक दोहा विशेष प्रसिद्ध है जिसमें इन पांचों का नाम उल्लेखनीय है—

"पाबू, हरभू रामदै, गोगादे जेहा।
पाँचूं पीर पधारजौ, मांगलिया मेहा।"[2]

हिन्दू-मुस्लिम एकता के प्रतीक और महान अछूतोद्धारक बाबा रामदेव का व्यक्तित्व समस्त प्रकार की साम्प्रदायिक एकता का प्रत्यक्ष प्रमाण है।[3] जातिगत भेदभाव को मिटाने वाले एवं एकता स्थापित करने वाले बाबा रामदेव आमजन में 'पीर' के नाम से सम्बोधित है।[4] वहीं पर भक्तों के लिए वह कृष्ण अवतार के रूप में प्रतिपाद्य है। जहां बाबा रामदेव निर्गुण-निराकार उपासकों के लिए ईश्वर हैं तो सगुणोपासकों के लिए विष्णु अवतार हैं। हिन्दू भक्तों ने रामदेव को विष्णु अथवा कृष्ण के अवतार के रूप में माना एवं पूजा है। विक्रम संवत् 1729 में रचित एक छन्द में भक्त कवि सायरखेम ने बाबा रामदेव के लिए लिखा है—

"अल्ला आदम अलख तूं, राम रहीम करीम।
गोसांई गोरख तूं, तोरई नाम तसलीम।।"[5]

बाबा रामदेव के भक्त कवियों ने रामदेव को पीर या लोकदेवता तक ही सीमित नहीं मानकर द्वारकाधीश श्रीकृष्ण या विष्णु का अवतार माना है। बाबा रामदेव के जन्म को लेकर एवं वैष्णव परम्परा को लेकर बचपन से अनेक वृतान्त एवं लोक आख्यान जुड़े हुए है। बाबा रामदेव के परिवार में सामाजिक समन्वय एवं पीर परम्परा के साथ ही वैष्णव परम्परा का समन्वय उनके दादा रिणसी के समय से ही दिखाई देता है।[6] स्वामी गोकुलदास ने अपनी पुस्तक में रिणसी की वैष्णव भक्ति के बारे में विस्तार से उल्लेख किया है। रिणसी एवं खिवण मेघवाल दोनों के द्वारा अजमेर, दूदू, बिचून आदि के पास में वैष्णव परम्परा के बारे में प्रसार-प्रचार करना भारी पड़ा एवं पादशाह/बादशाह द्वारा उनको मृत्यु दंड देना बताया गया है।[7]

रिणसी के बाद में बाबा रामदेव के पिता अजमाल जी का भी वैष्णव सम्प्रदाय के प्रति झुकाव साफ तौर पर दिखाई देता है। उनके साथ में सायर मेघवाल का नाम भी उल्लेखनीय है। क्योंकि सायर मेघवाल द्वारा ही रिणसी को वैष्णव भक्ति का मार्ग एवं द्वारका जाने के बारे में प्रेरित किया था जिसका उल्लेख रात्रि जम्मों एवं बाबा रामदेव से सम्बन्धित लोक साहित्य में उल्लेख मिलता है।[8] भंवर मेघवंशी ने भी अपनी पुस्तक में बताया है कि "मेघ रिख जयपाल गोत में, राव ग्रंथ प्रमाण। सायर अड़सीभोज रा, सुत रूपी दो भाण।।" सायर मेघवाल अजमाल के घर पर बेगार के रूप में काम करके उनकी गायों एवं घोड़ों को चराया करते थे। सायर मेघवाल धार्मिक प्रवृति के व्यक्ति थे जिसका प्रभाव अजमाल पर भी पड़ा था।[9] बाबा रामदेव के पुत्र नहीं होने की वजह से उनके साथ के लोगों द्वारा रिणसी का तिरस्कार किया गया। इससे परेशान होकर रिणसी जी की वैष्णव धर्म के प्रति श्रद्धा ओर प्रगाढ़ हो गई एवं प्रत्येक वर्ष द्वारका में उपस्थित होकर श्रीकृष्ण से पुत्र प्राप्ति की इच्छा जाहिर की। "बाहरे-बाहरे बर्षो अजमल रहयो एक धारी रे तेहरवे बरष मिलयों गिरधारी रै।"[10] अर्थात बारह वर्ष तक अजमाल जी ने वैष्णव भक्ति की जिसके परिणाम स्वरूप 13वें वर्ष में अजमाल जी को गिरधारी अर्थात कृष्ण ने दर्शन दिये। माना जाता है कि 12 वर्ष तक दर्शन नहीं होने से वह बहुत ही परेशान हो गये थे जिसका वृतान्त हमें साहित्य में एवं लोक भजनों में मिलता है कि द्वारकाधीश द्वारा उनको 12 वर्षों तक दर्शन नहीं दिये एवं मूर्ति की तरफ से कोई आवाज एवं प्रत्युत्तर का आभास नहीं हुआ। इससे परेशान होकर अजमाल को क्रोध आया और उन्होंने प्रसाद के रूप में पड़े बाजरी के लड्डू को उठाकर मूर्ति के मार दी। लक्ष्मी दत्त बारहठ ने अपनी पुस्तक में लिखा है कि "भोळा-भोळा भक्तों म्हारे लाडूडे री मारी, माथे उपर चोट गहरी आयी रै।"[11] अर्थात् किसी भोले भक्त ने मेरे लड्डू की सर पर मार दी इसलिए मेरे सिर पर चोट आ गई है। ऐसा वृतान्त अनेक लोक भजनों एवं गायक

कलाकारों द्वारा रात्रि जम्मों में गाया जाता है।[12] जिसमें अजमाल को द्वारकाधीश ने दर्शन दिये एवं उनके बीच में वार्तालाप हुआ। इसी वार्तालाप में भगवान ने अजमाल को पुत्र वरदान दिया। "भादूड़ा री दूज रो चंदों करे प्रकाश रामदवे बण आवसू भाई राखी मोटी आस।"[13] अर्थात भादवे की दूज के दिन चन्द्रमा आकाश में प्रकाश करेगा उस दिन मैं रामदेव के रूप में पुत्र स्वरूप आपके घर में आऊंगा। आज भी मान्यता है कि बाबा रामदेव ने अजमाल जी के घर पर अवतार लिया था। हांलकि उनका जन्म बहुत ही विवादों में आ चुका है। वर्तमान में भजन गायक बाबा रामदेव को सायर मेघवाल का पुत्र भी बताते है परन्तु साहित्य में इस प्रकार का उल्लेख दिखाई नहीं देता है। बाबा रामदेव के जन्म एवं उनके समाधिस्थ होने का कोई भी पुरातात्विक एवं साहित्यिक स्रोत नहीं मिला है। केवल भजनों में आने वाले उल्लेख के माध्यम से ही जन्म एवं समाधि को प्रमाणित माना जा रहा है।

बाबा रामदेव ने अपने जीवन काल में वैष्णव भक्ति का प्रसार-प्रचार किया परन्तु साथ में उन्होंने सभी धर्म एवं सम्प्रदायों को भी सम्मान किया।[14] इसलिए उनको सांस्कृतिक समन्वय का प्रतीक माना जाता है। बाबा रामदेव के बाद में उनके भक्तों द्वारा विपुल साहित्य की रचना की गई है जिसमें उनको अनेक नामों से संज्ञा दी गई है। श्रद्धालु भक्त कवि धेनदास ने तो अपनी सम्मति देते हुए बाबा रामदेव को साक्षात् परमेश्वर ही माना है—"रमता राम रूणीचै आया, परचै रै कारण पीर कैवाया, बापजी पीर कैवूं पण हो परमेसर, जती सती जूना जोगीसर।।"[15] अर्थात आप कृष्ण के अवतार है और आपने रूणीचा/रामदेवरा में जन्म लिया है। आपके द्वारा दिये गये अलौकिक पर्चों के कारण आप 'पीर' के नाम से भी जाने जाते हो। आपके और भी कई नाम है आपको किस नाम से पुकारे। आप पीर, परमेश्वर, जती, सती, जोगी, जोगीश्वर आदि नामों से सम्बोधित किये जाते रहे है।

रामदेव व बोहिता सेठ की कथा में भी उल्लेख मिलता है कि रामदेव के साथ में वैष्णव परम्परा जुड़ी हुई थी क्योंकि उनको 'नन्द किशोर' के नाम से सम्बोधित किया गया है। बाबा रामदेव ने श्रेष्ठी समुदाय को विदेश में जाने के लिए बहुत ही प्रोत्साहित किया था ताकि व्यापार को बढ़ावा दिया जा सके। सेठ बोहित को यह कहकर भेजा था कि जब भी किसी भी प्रकार की समस्या हो तो मुझे याद करना। जब सेठ बोहिता की समुद्र यात्रा में झंझावत आया और उसकी नाव डूबने लगी तब उसने बाबा रामदेव को याद किया। "चारों दिशा पानी भरा, उबके तरंग हिलोर। नाव डूबती तुम रखो, नागर नन्द किशोर।।"[16] अर्थात चारों तरफ पानी ही पानी दिखाई दे रहा है और समुद्र की लहरे बहुत ही ऊंची हो चुकी है। मेरी नाव तो इसमें डूबने वाली है केवल आप ही रक्षा कर सकते है। बाबा रामदेव द्वारा सेठ बोहिते को दिया गया पर्चा साहित्य एवं भजनों में विशेष तौर पर गाया जाता रहा है।

बाबा रामदेव के अनन्य भक्त कवि हरजी भाटी के अनुसार हिरणाकुस को मारने वाले भगवान विष्णु के अवतारी आप ही है। कौरवों को मारकर पाण्डवों के साथ प्रीत का निर्वाह करने वाले भगवान श्रीकृष्ण ही के रूप में आप ही अवतरित हुए है।

"हिरणाकुस नै मार हटायौ, प्रीत प्रहलादे री पाळी।
श्री निकलंक अवतारी, जहाज बोयते री तारी
घर अजमल अवतारी, जहाज बांणिये री तारी।।
केरूवां नै हर मार हटाया, अर प्रीत पांडुवां री पाळी।"[17]

इसी प्रकार हरजी भाटी अपनी अन्य एक बाणी में स्पष्ट करते हैं कि द्वारिका से पधारकर स्वयं गिरधारी (श्रीकृष्ण) ने ही तुवंरि का मान बढ़ाया है। अर्थात् बाबा रामदेव स्वयं द्वारकाधीश कृष्ण के रूप में अवतरित हुए है। "सोवणी द्वारका सूं आयो गिरधारी, तुंवरां रो बिड़द बधायो हद भारी।।"[18] अर्थात द्वारका के धणी कृष्ण के रूप में अजमाल जी के घर अवतार हुआ।

भक्त कवि विजोजी सांणी ने भी बाबा रामदेव को कृष्ण का अवतार एवं वैष्णव परम्परा से सम्बन्धित माना है। बाबा रामदेव को कान्हा कह कर सम्बोधित किया गया है एवं द्वारका से आकर रामदेवरा में स्थापति होने की बात कही गई है। "द्वारका सूं आयनै देवरौ थरपियौ।"[19]

इसी प्रकार जोधपुर के संत कवि महाराजा मानसिंह ने भी बाबा रामदेव को विष्णु तथा द्वारकाधीश श्रीकृष्ण का अवतार माना है। "पिछम द्वारका सूं रामदेव पधारिया भलो हुयो तुंवरां रौ। घर अजमलजी रै बिड़द बधारियौ, दैत मारियौ बंकौ।"[20] अर्थात् पृथ्वी का भार उतारने के लिए, देवताओं का कार्य पूर्ण करने के लिए पाप के विनाशक, विष्णु ने अजमालजी के घर अवतार लिया और देवताओं के सभी कार्य सिद्ध किए। बाबा रामदेव का यशोगान करते हुए बीकानेर के महाराजा गजसिंह उन्हें सुरपति इन्द्र का अहंकार नष्ट करने वाला, राजा बलि को

बांधने वाला तथा गजराज की पुकार सुनकर तत्काल भगवान विष्णु के समान उसे बचाने वाला बताते हुए कहते हैं "रामसाह जण आप रा सारण सदार गरज। वासव बल बांधण धणी, उगयंद करी अरज।।[21] अतः प्रत्येक भक्त कवि ने बाबा रामदेव को विष्णु के अवतार के रूप में वैष्णव परम्परा के रूप में उल्लेखित किया है।

राजस्थान के पांच पीरों में वीर मांगलिया मेहा का नाम भी बड़े आदर और सम्मान से लिया जाता है। जहां अन्य पीरों (रामेदवजी, गोगाजी, पाबूजी, हड़बूजी) का प्रामाणिक जीवन अनेक साहित्यिक साक्ष्यों से प्राप्त होता है, वहीं मांगलिया मेहा का जीवन परिचय के स्रोत बहुत कम मात्रा में उपलब्ध होते हैं। किवंदतियों के रूप में मेहा जी से सम्बन्धित कुछ साक्ष्य डिंगल काव्य में जरूर मिलते हैं। मेहाजी मांगलिया अपने समय के उदार क्षत्रिय, वीर पुरुष थे। राजस्थान के पंचपीरों की अग्रपंक्ति के लोकदेवताओं की पंक्ति में शुमार हैं। मेहाजी को विष्णु का अवतार माना गया जिसका प्रमाण हमें वीर मेहा प्रकाश में प्राप्त होता है। दूदा जी एवं मेहा से के बीच मे हुए संघर्ष का वर्णन करते हुए कवि ने लिखा है कि "का गोरख कमलापति, पाई नह पहचाण। पाव पड्यो प्रणाम कज्ज, घाव दूदै खग घाण।।[22] उपर्युक्त छन्द में कमलापति विष्णु के लिए प्रयुक्त हुआ है जिससे स्पष्ट होता है कि मेहा जी को विष्णु का अवतार माना गया।

बाबा रामदेव एवं मेहा जी की भांति ही पाबू जी को भी वैष्णव परम्परा से जोड़ा जाता है। पाबू जी को लक्ष्मण का अवतार मानते हुए राजस्थान के कवि मोडजी आशिया ने लिखा है कि "अधपत वालौ अंस। पड़ियौ अपछर पेट में। तद लछमण अवतंस। रतन कंवर पाबू रह्यो।।[23]

उपर्युक्त पंक्तियों में मोडजी आशिया ने पाबूजी को लक्ष्मण का अवतार मानते हुए कहा है कि अप्सरा और धांधल के संगम से अप्सरा के गर्भ से लक्ष्मण के अवतार रूप में पाबूजी जैसा रत्न पैदा हुआ। लक्ष्मण, श्रीराम के अनुज थे और वैष्णव धर्म से सम्बन्धित रहे हैं। इसलिए पाबू जी भी वैष्णव परम्परा से सीधा सम्बन्ध रखते है। पाबू जी की फड़ पर भी भगवान विष्णु के चिन्ह एवं उनसे जुड़ी परम्परा के चित्र भी प्रत्यक्ष रूप से देखे जा सकते है। पाबू जी के भजन एवं फड़ के गायन के समय विष्णु की अराधना प्रमख रूप से की जाती है। गोगा जी की पूजा मुख्य रूप से सर्प के देवता के रूप में की जाती रही है। परन्तु सर्प को भगवान विष्णु से भी जोड़ा जाता है।

निष्कर्ष

अतः सत्य, धर्म व न्याय के लिए अन्याय के विरुद्ध आत्मोत्सर्ग करने से इनकी पांचपीर के नाम से पूजा की जाने लगी। मेहाजी एक साधारण राजपूत परिवार से होते हुए भी आजीवन सत्य, धर्म व गौवंश की रक्षार्थ वीरतापूर्वक लड़ते हुए वीरगति को प्राप्त हुए। जनमानस ने आस्था स्वरूप इन्हें अपना आराध्य स्वीकार कर लोकदेवता का स्थान प्रदान किया। यह पांच पीर भक्ति ही नहीं बल्कि साम्प्रदायिक सद्भावना के रूप में विशेष तौर पर याद किये जाते रहे है। भक्ति के मार्ग को इन्होंने नई दशा प्रदान की। मुख्य धारा से हट कर इन्होंनें आमजन को सीधा मोक्ष का मार्ग बताया है। बाद में आने वाले भक्त कवियों ने इनकों अलग-अलग रूप में अलग-अलग सम्प्रदायों से जोड़ा परन्तु इनकी विचारधारा बिल्कुल साफ थी। विष्णु परम्परा के साथ शैव परम्परा, नाथ परम्परा, सूफी परम्परा आदि से इन सभी लोक देवताओं को जोड़ा जाता है क्योकि इन सभी पांच पीरों ने समन्वय की संस्कृति को महत्व दिया एवं भेदभाव और छुआछूत की राजनीति से उपर उठकर संदेश दिया।

सन्दर्भ सूची

1. भट्टाचार्य, हरिदास, दी कल्चर हेरिटेज ऑफ इण्डिया, वाल्यूम चतुर्थ, रामकृष्णमिशन इंस्टीट्यूट ऑफ कल्चर, कोलकता, 1937, पृ.सं. 47-48
2. पेमाराम, मध्यकालीन राजस्थान में धार्मिक आन्दोलन, राजस्थानी ग्रन्थागार, जोधपुर, 2009 पृ.सं. 31
3. शर्मा, कुमुद, लोकनायक बाबा रामेदव-लोक धर्म एवं लोक परम्परा, जयपुर पब्लिशिंग हाउस, 2011, पृ.सं. 41
4. खान, शीला डोमिनिक, इज गोड एन अनट्सेबल? ए केस ऑफ कास्ट कॉनफ्लिक्ट इन राजस्थान, कॉम्परेटिव स्टडी ऑफ साउथ एशिया, एफ्रिका एण्ड द मिडल ईस्ट, वॉल्यूम 18 नं.01, 1998, पृ.सं. 22
5. विश्नोई, सोनाराम, बाबा रामदेवः इतिहास और साहित्य, राजस्थानी ग्रन्थागार,जोधपुर, 2008, परिशिष्ट (ख), छन्द संख्या 03, पृ.सं. 478
6. पंवार, तमेघ, पश्चिमी राजस्थान में एक उपाश्रित पंथ की समतामूलक विचारधारा का ऐतिहासिक एवं सांस्कृतिक आधारः बाबा रामदेव के विशेष सन्दर्भ में, जिज्ञासा, ए जनरल ऑफ द हिस्ट्री ऑफ आइडिया एवं कल्चर, वॉ. 23-24, 2016-17 इतिहास एवं भारतीय संस्कृति विभाग, राजस्थान विश्वविद्यालय, जयपुर, पृ.सं. 81-89

7. स्वामी गोकुलदास, मेघवंश का इतिहास (ऋषि पुराण), सेवादास ऋषि, अलख स्थान डूमाडा, अजमेर, वि.सं. 2039
8. पंवार, तमेघ, पूर्वोक्त, पृ.सं. 81-89
9. मेघवंशी, भंवर, मेघवंशी बाबा रामदेव, रिखिया प्रकाशक, भीलवाड़ा, 2016, पृ.सं. 25
10. बाबा रामदेव के भजनों से लिया गया एक अंश।
11. बारहठ, लक्ष्मीदत्त, श्री रामदेव लीलामृत, लक्ष्मीनारायण रणछोड़दास, जोधपुर, रजि नं. 906/1953, पृ.सं. 12-13
12. विश्नोई, सोनाराम, बाबै की वांणी, राजस्थानी ग्रन्थागार, जोधपुर, 2015 पृ.सं. 21
13. पंवार, तमेघ, पूर्वोक्त, पृ.सं. 81-89
14. उपर्युक्त
15. परम्परा, विक्रमसिंह भाटी (सं.), राजस्थान के लोकदेवता, राजस्थानी शोध संस्थान, जोधपुर, पृ.सं. 64
16. आचार्य रामप्रकाश, रामदेव जीवन दर्शन, उॅाम आश्रम, जोधपुर, 2009, पृ.सं. 56
17. बाबा रामदेव के रात्रि जम्मों से लिया गया अंश।
18. विश्नोई, सोनाराम, पूर्वोक्त, परिशिष्ट भाग (क), बांणी संख्या 38, पृ.सं. 332-333
19. परम्परा, पूर्वोक्त, पृ. 65
20. विश्नोई, सोनाराम, पूर्वोक्त, परिशिष्ट भाग (क), बांणी संख्या 95, पृ.सं. 458
21. महाराजा गजसिंह द्वारा रचित 'रामदेवजी रा सोरठा', अनूप संस्कृत ग्रंथालय, बीकानेर, गृंथांक 70, पृ.सं. 65
22. परम्परा, पूर्वोक्त, पृ. 59
23. मोडजी, आशिया, पाबू प्रकास, (सं.) नारायणसिंह भाटी, महाराजा मानसिंह पुस्तक प्रकाश, जोधपुर, 1983, पृ.सं. 13